संस्कृत (209)

पाठ्यक्रम

औचित्य

संस्कृत विश्व की प्राचीनतम भाषा है। इसमें ज्ञान-विज्ञान के अनेक ग्रंथ उपलब्ध हैं, जो आधुनिक-विज्ञान के अध्ययन में सहायक हैं। भारत की प्रायः सभी भाषाओं पर इसका प्रभाव स्पष्ट दिखाई पड़ता है, केवल भारतीय भाषाओं पर ही नहीं 'अवेस्ता' आदि विदेशी भाषाओं पर भी इसका प्रभाव दृष्टिगत होता है। इसलिए इस भाषा का अध्ययन कर हम लोग दूसरी भाषाओं को जानने में समर्थ हो सकते हैं। नव शब्दनिर्माण में इस भाषा का सामर्थ्य चमत्कारी है। संस्कृत भाषा के अध्ययन से हम लोग भारत की प्राचीनतम संस्कृति को जानने में समर्थ हो सकेंगे। यह पाठ्यक्रम सम्प्रेषण पर आधारित है। राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान में छात्रों के मार्गदर्शन के लिए इसका निर्माण किया गया है। इससे छात्रगण संस्कृत भाषा में निहित नैतिक मूल्यों से भी परिचित होंगे और उन्हें अपने जीवन में धारण करने में समर्थ होंगे तथा राष्ट्रनिर्माण में अधिक से अधिक सहयोगी बनेंगे।

सामान्य उद्देश्य

माध्यमिक स्तर पर संस्कृत पठन-पाठन के निम्नलिखित उद्देश्य हैं-

1. संस्कृत भाषा का सामान्य ज्ञान कराना, जिससे संस्कृत के सरल अंशों को सुनकर या पढ़कर छात्र उन अंशों के अर्थ को समझ सकेंगे तथा मौखिक एवं लिखित अभिव्यक्ति कर सकेंगे।
2. संस्कृत साहित्य के प्रति छात्रों में अभिरुचि उत्पन्न करना।
3. संस्कृत साहित्य की प्रमुख विधाओं (गद्य, पद्य एवं नाटक आदि की प्रतिनिधि रचनाओं से छात्रों का परिचय कराना)
4. छात्रों में राष्ट्रीय, सांस्कृतिक, सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों को विकसित करना।
5. विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में प्राचीन भारतीय मनीषियों के मौलिक अन्वेषण, चिंतन एवं विशिष्ट योगदान से छात्रों को परिचित कराना।

विशिष्ट उद्देश्य-

श्रवण कौशल

(क) छात्र संस्कृत की विशिष्ट ध्वनियों को सुनकर पहचान सकेंगे (उदा, पदान्त स्वर, पदान्त व्यंजन, विसर्ग, अनुस्वार एवं संयुक्ताक्षर आदि)

(ख) संस्कृत के सरल वाक्यों को सुनकर अर्थ समझ सकेंगे तथा तदनुसार व्यवहार कर सकेंगे।

वाचन कौशल

(क) संस्कृत में प्रयुक्त विशिष्ट ध्वनियों का सम्यक् उच्चारण कर सकेंगे। (उदा, स्वर, मात्रा व्यंजन, संयुक्ताक्षर आदि)

(ख) संस्कृत वाक्यों का शुद्ध उच्चारण कर सकेंगे।

(ग) पद्य रचनाओं का सस्वर वाचन कर सकेंगे।

(घ) पठित सामग्री पर पूछे प्रश्नों का उत्तर दे सकेंगे।

पठन कौशल

(क) संस्कृत के गद्यांशों, पद्यांशों एवं नाट्यांशों का स्पष्ट व शुद्ध पाठ करते हुए सारांश समझ सकेंगे।

लेखन कौशल

(क) पठित पदों एवं वाक्यों को सुनकर उन्हें शुद्ध वर्तनी में लिख सकेंगे।

(ख) सन्धियुक्त एवं समासयुक्त पदों एवं वाक्यों का अनुलेखन कर सकेंगे।

(ग) पठित कथा अथवा उसके अंश का सार पाँच संस्कृत वाक्यों में लिख सकेंगे।

(घ) चित्रों को देखकर संस्कृत में उनका वर्णन कर सकेंगे।

(ङ) दिये गये वाक्यों को घटनाक्रमानुसार लिख सकेंगे।

पाठ्य सामग्री

1. पाठ्यपुस्तक- संस्कृतम् - 1 एवं संस्कृतम्-2
2. अनुप्रयुक्त व्याकरण
3. सी.डी./कैसेट

दोनों पाठ्यपुस्तकों में 11-11 (कुल-22) पाठ होंगे। पाठ्यविषय के रूप में आकर्षक कथा, सरल संवाद, नाटकीय दृश्य, सुबोध एवं शिक्षाप्रद श्लोक गेय तथा ललित पद्य, विशिष्ट बालक-बालिकाओं एवं महापुरुषों के जीवन चरित्र एवं प्राचीन भारतीय मनीषियों के महत्त्वपूर्ण वैज्ञानिक योगदान आदि को आधार बनाया जायेगा। इसके अतिरिक्त संस्कृत साहित्य की विविध विधाओं के क्रम में आधुनिक प्रसिद्ध रचनाओं से भी पाठ संकलित किये जायेंगे।

व्याकरण के निर्धारित अंश

1. वर्ण परिचय तथा उच्चारण स्थान
2. सन्धि परिचय-

   (क) स्वर सन्धि- दीर्घ, गुण, वृद्धि, यण् अयादि।

(ख) व्यंजन सन्धि- श्चुत्व, ष्टुत्व, जश्त्व, चर्त्व, अनुस्वार।

(ग) विसर्ग सन्धि- सत्व, रुत्व, उत्व, रेफ, लोप।

शब्दरूप

स्वरान्त- बालक, फल, लता, मुनि, पति, मति, नदी, साधु, मधु, मातृ, पितृ एवं धेनु।

व्यञ्जनान्त- राजन्, विद्वस्, गच्छत्, आत्मन्, भवत्, तत्, अस्मद् एवं युष्मद्

सर्वनामपद- सर्व, यत्, तत्, किम्, इदम् (सभी लिङ्ग में)

संख्यावाची शब्द- 1-5 (एक से पाँच) तक संख्याओं के रूप

धातुरूप-

भ्वादि- भू पठ्, पा (पिब्), गम् (गच्छ्), दृश् (पश्य), लिख्, लभ्, नी।

अदादि- अस्, ब्रू, हन्, वच्

जुहोत्यादि- दा, धा

दिवादि- नृत्, नश्, विद्, मन्।

स्वादि- शक्, श्रु, आप्

तुदादि- तुद्, इष् (इच्छ)

तनादि- तन् कृ

क्र्यादि- क्री, ग्रह्

चुरादि- चुर, भक्ष्, कथ्

उपसर्ग- पाठानुसार

प्रत्यय-

कृत् प्रत्यय- क्त्वा, ल्यप्, तुमुन्, शतृ, शानच्, तव्यत्, अनीयर्, क्त, क्तवतु।

तद्धित प्रत्यय- मतुप्, तरप्, तमप्, ठक्, त्व, तल् इन्।

स्त्री प्रत्यय- टाप्, ङीप्, ङीष्।

कारक एवं उपपद विभक्ति सामान्य परिचय

समास–

अव्ययीभाव, तत्पुरुष, कर्मधारय, द्विगु, द्वन्द्व एवं बहुव्रीहि। समस्त पदों का विग्रह और समस्त पद निर्माण।

अंक- योजना

क.	**पाठ्यपुस्तक**	50	
1.	(i) गद्यांशाधारित	5	
	(ii) पद्यांशाधारित	5	= 15
	(iii) नाट्यांशाधारित	5	
2.	भावार्थ		
	(i) गद्य	5	= 10
	(ii) पद्य/अन्वय	5	
3.	प्रश्ननिर्माण	05 गद्य	
4.	पाठाधारित प्रश्न	05	
5.	पाठ-सारांश (कथामूलक)	05	
6.	पाठाधारित लेखक/ग्रंथ परिचय	05	नाटक
7.	चरित्र चित्रण	05	
ख.	**प्रायोगिक-व्याकरण**		
1.	वर्ण-परिचय एवम् उच्चारण स्थान	2	
2.	सन्धि		
	(i) स्वर सन्धि	2	
	(ii) व्यंजन सन्धि	2	= 5
	(iii) विसर्ग सन्धि	1	
3.	शब्द रूप		
	(i) शब्दरूप 3		= 5
	(ii) संख्यावाचीशब्द 2		
4.	धातु रूप	04	

5.	समास	04	
6.	प्रत्यय		
	1. कृत - 3 2. तद्धि - 2	05	
7.	कारक		
	(i) कारक विभक्ति-1 (ii) उपपद विभक्ति-2	03	
8.	उपसर्ग	01	
9.	अव्यय पद	01	
ग.	रचना	20	
	1. अनुच्छेद लेखन (संकेताधारित)	05	
	2. पत्रलेखन (संकेताधारित) मञ्जूषा सहित	05	20
	3. चित्रवर्णन	05	
	4. अपठित गद्यांशाधारितप्रश्नोत्तर (40-50 शब्द-परिमित)	05	
	कुल योग	100	

मूल्यांकन योजना

1. उपर्युक्त अंक-विभाजन के अनुसार 100 अंकों की एक लिखित परीक्षा होगी। इसके अतिरिक्त संपर्क कक्षाओं में 25 अंकों के शिक्षक अंकित तीन मूल्यांकन-पत्र होंगे। इनमें से कोई एक छात्रों के द्वारा करना अनिवार्य होगा। अध्ययन केन्द्रों पर इसका मूल्यांकन होगा।

2. प्रश्न-पत्र में ज्ञान, अवबोधन एवम् अभिव्यक्ति तीनों प्रकार के प्रश्नों का समुचित अनुपात समावेश होगा। साथ ही अतिलघूत्तरात्मक, लघूत्तरात्मक तथा निबन्धात्मक प्रश्नों का भी समावेश होगा।

3. भाषा-कौशलों के विकास के लिए विशेषत: श्रवण एवं भाषण कौशलों के लिए, अध्यापक संपर्क कक्षाओं में

यथावसर मौखिक मूल्यांकन करेंगे।

अध्ययन योजना

संस्कृत के पाठ्यक्रम के साथ निम्नलिखित सामग्री सम्मिलित होगी:-

1. दो मुद्रित पुस्तकें
2. श्रवण, भाषण, पठन एवं लेखन कौशलों के विकास के लिए ध्वनि-मुद्रिका (कैसेट) या सान्द्रमुद्रिका (सीडी रोम) एवं शिक्षक अंकित-मूल्यांकन-पत्र दिया जाएगा। साथ ही छात्रों को एक परियोजना-कार्य भी करना होगा।
3. व्याकरण का शिक्षण प्रायोगिक रूप में पाठों के साथ ही होगा।
4. 30 संपर्क-कक्षाएं अध्ययन-केन्द्रों पर होगी।
5. श्रवण एवं भाषण कौशलों का विकास अध्ययन-केन्द्रों पर संपर्क कक्षाओं में होगा।
6. पाठों के निर्माण एवं संपर्क कक्षाओं में अध्यापन के समय छात्रों में जीवन-कौशलों के समुचित विकास का ध्यान रखा जाएगा जिससे उनमें स्वत: चिंतन एवं तार्किक-शक्ति का विकास हो सके।
7. इस पाठ्यक्रम को विद्यार्थी कम से कम एक वर्ष में और अधिक से अधिक पाँच वर्षों में पूरा कर सकता है।

मूल्यांकन-योजना

1. उपर्युक्त अंक-विभाजन के अनुसार 100 अंकों की एक लिखित परीक्षा होगी। इसके अतिरिक्त संपर्क कक्षाओं में 25 अंकों के तीन शिक्षक-अंकित मूल्यांकन-पत्र होंगे। इनमें से कोई एक छात्रों के द्वारा करना अनिवार्य होगा। अध्ययन केन्द्रों पर इसका मूल्यांकन होगा।
2. प्रश्न-पत्र में ज्ञान, अवबोधन एवम् अभिव्यक्ति तीनों प्रकार के प्रश्नों का समुचित अनुपात समाविष्ट होगा। साथ ही अतिलघूत्तरात्मक, लघूत्तरात्मक तथा निबंधात्मक प्रश्नों का भी समावेश होगा।
3. भाषा-कौशलों के विकास के लिए विशेषत:- श्रवण एवं भाषण कौशलों के लिए, अध्यापक संपर्क कक्षाओं में यथावसर मौखिक मूल्यांकन करेंगे।